अर्गळा स्तोत्रं

अर्गळा स्तोत्रं

ॐ अस्य श्री अर्गलास्तोत्रमहामंत्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, श्री महालक्ष्मीर्देवता, श्री जगदंबाप्रीतये सप्तशतीपाठांगत्वेन जपे विनियोगः ||

ॐ नमश्चंडिकायै |

मार्कंडेय उवाच |
ॐ जय त्वं देवि चामुंडे जय भूतापहारिणि |
जय सर्वगते देवि काळरात्रि नमोऽस्तु ते || 1 ||

जयंती मंगळा काळी भद्रकाळी कपालिनी |
दुर्गा शिवा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते || 2 ||

मधुकैटभविध्वंसि विधातृवरदे नमः |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 3 ||

महिषासुरनिर्नाशि भक्तानां सुखदे नमः |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 4 ||

धूम्रनेत्रवधे देवि धर्मकामार्थदायिनि |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 5 ||

रक्तबीजवधे देवि चंडमुंडविनाशिनि |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 6 ||

निशुंभशुंभनिर्नाशि त्रैलोक्यशुभदे नमः |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 7 ||

वंदितांघ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 8 ||

अचिंत्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 9 ||

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चापर्णे दुरितापहे |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 10 ||

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चंडिके व्याधिनाशिनि |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 11 ||

चंडिके सततं युद्धे जयंति पापनाशिनि |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 12 ||

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि देवि परं सुखं |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 13 ||

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि विपुलां श्रियं |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 14 ||

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 15 ||

सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽंबिके |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 16 ||

विद्यावंतं यशस्वंतं लक्ष्मीवंतंच मां कुरु |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 17 ||

देवि प्रचंडदोर्दंडदैत्यदर्पनिषूदिनि |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 18 ||

प्रचंडदैत्यदर्पघ्ने चंडिके प्रणताय मे |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 19 ||

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 20 ||

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदांबिके |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 21 ||

हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 22 ||

इंद्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 23 ||

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानंदोदयेऽंबिके |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 24 ||

भार्यां मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीं |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 25 ||

तारिणि दुर्गसंसारसागरस्याचलोद्भवे |
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि || 26 ||

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः |
सप्तशतीं समाराध्य वरमाप्नोति दुर्लभं || 27 ||

इति श्रीमार्कंडेयपुराणे अर्गळा स्तोत्रं |